शेयर सलाह लेते समय देखें अनुभव और पृष्ठभूमि

सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारियों के जाल से कैसे बचें और किसी की शेयर सलाह लेते समय क्या ध्यान रखें, बता रहे हैं बाजार विश्लेषक शोमेश कुमार।

आपने सेबी का अभी हाल का एक आदेश देखा होगा कि कुछ यूट्यूब चैनलों पर किस तरह से प्रमोशन किया जा रहा है और आम निवेशकों को गलत सलाह दी जा रही है। यह आदेश तो केवल एक नमूना है। अगर सेबी ढूँढ़ने जाये तो सेबी के पास लोग कम पड़ जायेंगे इसका पूरा रिसर्च निकाल कर लाने के लिए। तो निवेशकों को खुद ही ध्यान रखना पड़ेगा। टेलीग्राम, यूट्यूब, ट्विटर - इन पर जाना चाहते हैं तो जाइए, लेकिन आपके सामने सेबी के इस आदेश के रूप में प्रमाण है। इसलिए अपनी आँखें खोलिए और सेबी रजिस्टर्ड जो लोग हैं उनके पास ही जाइए, उनके साथ ही काम कीजिए।

उनके बीच कौन कैसा है, यह समझने के लिए यहाँ मैं अपना ही उदाहरण दे देता हूँ, और यही सबके लिए अगर सबक हो सके तो हो जाये। सबसे पहली चीज जान लीजिए कि हम जिस क्षेत्र में हैं - उसे आप निवेश सलाह कह लीजिए या रिसर्च एनालिस्ट कह लीजिए, जहाँ पर आपके पैसे की जिम्मेदारी किसी-न-किसी तरीके से ली जाती है, या तो पीएमएस के तरीके से या सलाह के तरीके से - ये वैसी जिम्मेदारी है, उसे मैं बड़े कच्चे शब्दों में आपको समझाता हूँ।

एक है ड्राइविंग सीखना महीने-दो महीने किसी ड्राइवर के साथ बैठ कर, और दूसरा है स्वतंत्र रूप से शहर में गाड़ी चलाना। दोनों में बहुत बड़ा फर्क है। और उससे भी बड़ा फर्क हो जाता है, जब आप शहर में गाड़ी चलाते-चलाते हाइवे पर लेकर जाते हैं। यह इतना बड़ा फर्क होता है कि इसे आपको कोई किताब नहीं समझा सकती है। यह आपको सिर्फ अनुभव समझा सकता है।

इसके जरिये पहली बात जो मैं आपको समझाना चाह रहा हूँ, वह यही है कि जो लोग यूट्यूब पर आते हैं, या रजिस्टर्ड भी हैं, पहले तो आप देखिए कि उनका कम-से-कम 10 साल का अनुभव होना ही चाहिए। इसका कारण मैं आपको बताता हूँ। शेयर बाजार में कॉल निकालना किसी के लिए आज कोई बड़ी बात नहीं है। आप 100 एनालिस्ट ढूढ़ेंगे तो 98 आपको टेक्निकल मिलेंगे और दो कहीं से फंडामेंटल और टेक्निकल समझने वाले मिलेंगे। सबसे आसान है न कि टेक्निकल में चार बातें पढ़ लीं और उसके बाद आकर कॉल देते रहिए, भले उसकी विस्तृत समझ हो या नहीं।

इसलिए सबसे पहले ध्यान रखें कि आप जिसके पास भी जा रहे हैं, उसका 10 साल का ट्रैक रिकॉर्ड होना चाहिए। क्यों होना चाहिए? इसलिए उसको हर तरह के थपेड़े खाकर, बड़े संस्थानों में जाकर, सीख कर, समझ कर, अनुभव लेकर आना पड़ेगा, तभी वह स्वतंत्र रूप से आपके निवेश को आगे ले जाने के काबिल बनेगा।

जब तक कोई कम-से-कम दो मंदी वाले बाजार (बेयर मार्केट) नहीं देखेगा - तेजी के बाजार (बुल मार्केट) में तो बहुत आसान काम होता है, उसमें आपको न मेरी जरूरत है न दुनिया का कोई और चाहिए - पर जब तक कोई दो मंदी के बाजारों को देखा हुआ अनुभवी सलाहकार या विश्लेषक नहीं मिलेगा, ज्यादातर मामलों में वह आपको सही तरीके से आगे नहीं लेकर जा पायेगा।

तो पहला फिल्टर आपके पास है कि अनुभव होना बहुत जरूरी है। इसलिए आप जो यूट्यूब पर देखते हैं न कि स्मार्ट और तेज-तर्रार दिखने वाले जो भाषा बोलते हैं, उन सबसे थोड़ा सावधान रहिये और पीछे जाकर उनके बारे में समझ लीजिए कि उनका अनुभव और ट्रैक रिकॉर्ड कैसा है। ये सबसे पहली जरूरी चीज है।

दूसरी चीज यह कि जोखिम हर चीज में है। आपके अपने काम में भी है। आप किसी डॉक्टर के पास भी जाते हैं, तो वह आपको ठीक करेगा या नहीं कर पायेगा, वह भी एक जोखिम है। लेकिन आप एक तार्किक, सोचा-समझा जोखिम लेते हैं। तो जब आप किसी सलाहकार या एनालिस्ट के पास आप जाते हैं, तो इतना देख-परख कर और उसकी पृष्ठभूमि का पता लगा कर एक जाना-समझा जोखिम लीजिए। साथ ही उसका जो भी (निवेश का) तरीका है, उसके हिसाब से आप उसको मौका दीजिए। अगर उसके बाद भी वह सफल नहीं है तो आपके लिए 100% वजह बनती है कि आप वहाँ से वापस हो जायें।

इसके अलावा, आप कहीं भी जाते हैं तो कहीं यह लिखा नहीं रहता है कि वह चोर है या वह चोर नहीं है। लेकिन इतना तो जरूर है कि अगर सेबी का पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) किसी को मिलता है, तो वह कहीं-न-कहीं एक ऐसा फिल्टर है जिससे पता चलता है कि व्यक्ति हकीकत में कुछ हद तक योग्य है। बाकी वह वहाँ से आगे लेकर जायेगा कि नहीं, वह उसकी अपनी फितरत है। अंदर से कौन चोर है, कोई नहीं कह सकता है। मैं ही चोर हूँ या नहीं - मेरे चेहरे पर तो लिखा हुआ नहीं है कि मैं चोर हूँ या नहीं हूँ। आप इसकी पहचान नहीं कर सकते हैं, वह वक्त के साथ ही समझ में आता है।